



NEERAJ®

M.S.O. -2

शोध पद्धतियाँ एवं विधियाँ

(Research Methodologies and Methods)

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

IGNOU.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *V.B. Singh,*

M.A. M.A. (Sociology, Political Science, History & Ph.D.)



**NEERAJ
PUBLICATIONS**

(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com

Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 480/-

Content

शोध पद्धतियाँ एवं विधियाँ (Research Methodologies and Methods)

Question Paper—June-2024 (Solved)	1-2
Question Paper—December-2023 (Solved)	1-2
Question Paper—June-2023 (Solved)	1
Question Paper—December-2022 (Solved)	1-2
Question Paper—Exam Held in March-2022 (Solved)	1-3
Question Paper—Exam Held in August-2021 (Solved)	1-2
Question Paper—Exam Held in February-2021 (Solved)	1-2
Question Paper—December, 2019 (Solved)	1-2
Question Paper—June, 2019 (Solved)	1-3

<i>S.No.</i>	<i>Chapterwise Reference Book</i>	<i>Page</i>
--------------	-----------------------------------	-------------

शोध पद्धतियाँ (Research Approaches)

सामाजिक यथार्थ के बोधार्थ उपागम (Cognitive Approaches of Social Reality)

1. सामाजिक शोध का तर्क (Argument for Social Research)	1
2. अनुभवजन्य उपागम (Empirical Approach)	11
3. सिद्धान्त निर्माण के विविध तर्क (Various Arguments for Making Principles)	25
4. सैद्धान्तिक विश्लेषण (Theoretical Analysis)	34

सामाजिक शोध के दार्शनिक आधार (Philosophical Basis of Social Research)

5. ज्ञानमीमांसा के मुद्दे (Issues of Epistemology)	56
6. सामाजिक विज्ञान का दर्शनशास्त्र (Philosophy of Social Science)	73

<i>S.No.</i>	<i>Chapterwise Reference Book</i>	<i>Page</i>
7.	प्रत्यक्षवाद तथा इसकी मीमांसा (Positivism and Its Critique)	81
8.	भाष्यशास्त्र (Hermeneutics)	97
समकालीन परिप्रेक्ष्य (Contemporary Perspective)		
9.	तुलनात्मक पद्धति (Comparative Method)	103
10.	महिलावादी उपागम (Feminist Approach)	108
11.	सहभागी विधि (Participatory Method)	115
मात्रात्मक तकनीक और सर्वेक्षण विधियाँ		
शोध के प्रकार, विधियाँ और प्रारूप (Kinds, Methods and Components of Research)		
12.	शोध के प्रकार (Kinds of Research)	120
13.	शोध की विधियाँ (Research Methods)	133
14.	शोध प्रारूप के तत्त्व (Components of Research Model)	138
मात्रात्मक विधियाँ (Quantitative Methods)		
15.	प्रतिचयन विधियाँ और प्रतिदर्श आकार का आकलन	144
(Sampling Methods and Speculation of Sampling Size)		
16.	केन्द्रीय प्रवृत्ति के माप (Measurement of Central Tendency)	155
17.	परिक्षेपण माप और परिवर्तिता (Variance Measurement and Variation)	164
18.	सांख्यिकीय अनुमिति : प्राक्कल्पना परीक्षण (Statistical Inference: Hypothesis Testing)...	174
19.	सहसम्बन्ध तथा समाश्रयण (Correlation and Regression)	179
सर्वेक्षण शोध (Survey Research)		
20.	सर्वेक्षण विधि (Survey Method)	189
21.	सर्वेक्षण प्रारूप (Survey Format)	198

<i>S.No.</i>	<i>Chapterwise Reference Book</i>	<i>Page</i>
22.	सर्वेक्षण उपकरण (Survey Equipments)	209
23.	सर्वेक्षण निष्पादन और शोध सामग्री विश्लेषण (Survey Performance and Research Material Analysis)	239
गुणात्मक शोध पद्धति और तकनीकें (Qualitative Research Method and Techniques)		
24.	क्षेत्र-शोध-I (Field Work-I)	246
25.	क्षेत्र-शोध-II (Field Work-II)	260
26.	विश्वसनीयता, वैधता तथा त्रिभुजन (Reliability, Validity and Triple Armed)	276
27.	गुणात्मक आँकड़ों का आरूपण एवं संसाधन (Formatting of Qualitative Data and their Processing)	282
28.	गुणात्मक आँकड़ों का लेखन (Writing of Qualitative Data)	286
आँकड़ों का विश्लेषण और शोध निष्कर्षों का प्रस्तुतीकरण (Analysis of Data and Presentation of Research Conclusions)		
29.	इंटरनेट और शब्द संसाधक का प्रयोग (Use of Internet and Word Processing)	289
30.	आँकड़े विश्लेषण के लिए एस.पी.एस.एस. (Use of SPSS for Data Analysis)	301
31.	रिपोर्ट लेखन में एस.पी.एस.एस. का प्रयोग (Use of SPSS in Report Writing)	311
32.	सारणीयन और ग्राफिक प्रस्तुतीकरण-केस अध्ययन (Tabulation and Graphic Presentation-Case Study)	322
33.	शोध परियोजना कार्य के लिए दिशा-निर्देश (Directions for Research Project Work) ...	327



**Sample Preview
of the
Solved
Sample Question
Papers**

Published by:



**NEERAJ
PUBLICATIONS**

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2024

(Solved)

शोध पद्धतियां एवं विधियां

(Research Methodologies and Methods)

M.S.O.-2

समय : 3 घण्टे |

| अधिकतम अंक : 100

नोट : निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक भाग से कम-से-कम दो प्रश्नों के उत्तर अवश्य दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

भाग-I

प्रश्न 1. समाजशास्त्र के अध्ययन क्षेत्र में सिद्धान्त का क्या महत्त्व है? चर्चा कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-3, पृष्ठ-25, प्रश्न 1

प्रश्न 2. कार्यात्मक सिद्धान्तों के खिलाफ आलोचना पर चर्चा कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-4, पृष्ठ-35, 'प्रकार्यवादी सिद्धान्त', पृष्ठ-45, प्रश्न 11, पृष्ठ-46, प्रश्न 12

प्रश्न 3. सामाजिक विज्ञान की परिघटना सम्बन्धी परम्परा की व्याख्या कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-6, पृष्ठ-74, प्रश्न 2

प्रश्न 4. सहभागी शोध से आप क्या समझते हैं?

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-11, पृष्ठ-115, प्रश्न 1

प्रश्न 5. ऐतिहासिक और उद्बिकासवादी पद्धति के मध्य अन्तर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-13, पृष्ठ-135, प्रश्न 5, पृष्ठ-134, प्रश्न 4, 'उद्बिकासीय विधि'

भाग-II

प्रश्न 6. विभिन्न प्रकार की प्रतिचयन विधियों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-15, पृष्ठ-144, प्रश्न 1

प्रश्न 7. माध्य, बहुलक और माध्यिका के मध्य क्या सम्बन्ध है?

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-16, पृष्ठ-155, 'परिचय', पृष्ठ-158, प्रश्न 2, पृष्ठ-160, प्रश्न 3

प्रश्न 8. विभिन्न प्रकार के सहसम्बन्धों का वर्णन कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-19, पृष्ठ-179, प्रश्न 1

प्रश्न 9. शोध निष्कर्षों की प्रस्तुति में आई.सी.टी. की भूमिका का उपयुक्त उदाहरणों के सहित वर्णन कीजिए।

उत्तर-सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) अनुसंधान निष्कर्षों की प्रस्तुति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, जिससे

प्रक्रिया अधिक कुशल, आकर्षक और सुलभ हो जाती है। यहां उपयुक्त उदाहरणों के साथ शोध निष्कर्ष प्रस्तुत करने में आईसीटी की कुछ प्रमुख भूमिकाएं दी गई हैं-

1. डेटा विजुअलाइजेशन-आईसीटी उपकरण शोधकर्ताओं को चार्ट, ग्राफ और इन्फोग्राफिक्स जैसे डेटा का दृश्य प्रतिनिधित्व बनाने में सक्षम बनाते हैं, जो जटिल जानकारी को स्पष्ट और प्रभावी ढंग से चित्रित करने में मदद करते हैं। उदाहरणतः, जलवायु परिवर्तन के प्रभाव का विश्लेषण करने वाला एक शोधकर्ता इंटरैक्टिव मानचित्र और ग्राफ बनाने के लिए Microsoft Excel या Tableau जैसे सॉफ्टवेयर का उपयोग कर सकता है जो विभिन्न क्षेत्रों में समय के साथ तापमान परिवर्तन को प्रदर्शित करता है।

2. मल्टीमीडिया एकीकरण-आईसीटी प्रस्तुतियों में वीडियो, ऑडियो क्लिप और एनिमेशन जैसे मल्टीमीडिया तत्वों के एकीकरण की अनुमति देता है, जिससे निष्कर्षों का संचार अधिक गतिशील और आकर्षक हो जाता है। उदाहरणतः अपने प्राकृतिक आवास में जानवरों के व्यवहार पर एक अध्ययन में अनुसंधान का समर्थन करने वाले दृश्य साक्ष्य प्रदान करने के लिए पावरपॉइंट प्रस्तुति में एम्बेडेड जानवरों की वीडियो क्लिप या एडोब प्रीमियर प्रो जैसे वीडियो संपादन टूल शामिल हो सकते हैं।

3. इंटरैक्टिव प्रस्तुतियाँ-आईसीटी इंटरैक्टिव प्रस्तुतियों के निर्माण की सुविधा प्रदान करता है, जहां दर्शक अधिक जानकारी प्रकट करने, विवरणों को जूम करने या विभिन्न कोणों से डेटा का पता लगाने के लिए तत्वों पर क्लिक करके सामग्री से जुड़ सकते हैं। उदाहरणतः एक सार्वजनिक स्वास्थ्य शोधकर्ता प्रस्तुति के साथ बातचीत करके हितधारकों को विभिन्न स्वास्थ्य आंकड़ों, रुझानों और परिणामों का पता लगाने की अनुमति देने के लिए इंटरैक्टिव पीडीएफ दस्तावेजों का उपयोग कर सकता है।

4. ऑनलाइन प्लेटफॉर्म और सहयोग उपकरण-आईसीटी जूम, गूगल स्लाइड्स और माइक्रोसॉफ्ट टीम्स जैसे ऑनलाइन

प्लेटफॉर्म के उपयोग का समर्थन करता है, जो शोधकर्ताओं को अपने निष्कर्षों को वैश्विक दर्शकों के सामने पेश करने, वास्तविक समय में साधियों के साथ सहयोग करने और तत्काल प्रतिक्रिया प्राप्त करने में सक्षम बनाता है। उदाहरणः, एक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के दौरान, एक शोधकर्ता निष्कर्ष प्रस्तुत करने के लिए जूम का उपयोग कर सकता है और उपस्थित लोगों के साथ बातचीत करने, उनकी राय एकत्र करने और तुरंत प्रतिक्रिया शामिल करने के लिए चैट और मतदान सुविधाओं का उपयोग कर सकता है।

5. **प्रकाशन एवं प्रसार**—अनुसंधान निष्कर्षों को डिजिटल प्रारूप में प्रकाशित करने और उन्हें वेबसाइटों, ऑनलाइन पत्रिकाओं, सोशल मीडिया और अन्य डिजिटल चैनलों के माध्यम से व्यापक रूप से प्रसारित करने के लिए आईसीटी उपकरण आवश्यक हैं। उदाहरणतः, रिसर्चगेट या शैक्षणिक मंथन जैसे मंच पर प्रकाशित एक अध्ययन वैश्विक दर्शकों तक पहुंच सकता है, जिससे शोधकर्ताओं को अपने निष्कर्ष साझा करने, अन्य शिक्षाविदों के साथ जुड़ने और डाउनलोड और उद्धरण जैसे मेट्रिक्स के माध्यम से अपने काम के प्रभाव को ट्रैक करने की अनुमति मिलती है।

6. **सिमुलेशन और मॉडलिंग**—आईसीटी अनुसंधान डेटा के आधार पर काल्पनिक परिदृश्य प्रस्तुत करने या परिणामों का पूर्वानुमान लगाने के लिए सिमुलेशन और मॉडलिंग टूल के उपयोग को सक्षम बनाता है, जो विषय वस्तु में गहरी अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। उदाहरणतः, एक अर्थशास्त्री आर्थिक संकेतकों पर नीतिगत परिवर्तनों के संभावित प्रभाव को मॉडल करने के लिए MATLAB या R जैसे सिमुलेशन सॉफ्टवेयर का उपयोग कर सकता है, एक रिपोर्ट या इंटरैक्टिव डैशबोर्ड में सिमुलेशन के माध्यम से परिणाम प्रस्तुत कर सकता है।

7. **बढ़ी हुई पहुंच**—आईसीटी पीडीएफ, ई-बुक, पॉडकास्ट और वेबिनार जैसे विभिन्न प्रारूपों का समर्थन करके, विभिन्न दर्शकों और सीखने की प्राथमिकताओं को पूरा करके अनुसंधान निष्कर्षों को अधिक सुलभ बनाता है। उदाहरणतः, एक शोधकर्ता अपने शोध प्रबंध को एक सुलभ ई-बुक प्रारूप में परिवर्तित कर सकता है या प्रमुख निष्कर्षों को सारांशित करते हुए एक पॉडकास्ट शृंखला बना सकता है, जिससे शोध अकादमिक क्षेत्र से परे व्यापक दर्शकों के लिए उपलब्ध हो सके।

प्रश्न 10. एस. पी.एस.एस. सॉफ्टवेयर डेटा विश्लेषण में कैसे मदद करता है?

नज़र देखें अध्याय-3, पृष्ठ-31, प्रश्न 1

इसे भी जोड़ें—एसपीएसएस एक शक्तिशाली सॉफ्टवेयर उपकरण है, जिसका व्यापक रूप से सामाजिक विज्ञान अनुसंधान, व्यवसाय, स्वास्थ्य सेवा और विभिन्न अन्य क्षेत्रों में सांख्यिकीय विश्लेषण के लिए उपयोग किया जाता है। एसपीएसएस विभिन्न तरह से सॉफ्टवेयर विश्लेषण में मदद करता है—

1. **डेटा प्रबंधन**—एसपीएसएस उपयोगकर्ताओं को बड़े डेटासेट को कुशलतापूर्वक इनपुट करने, व्यवस्थित करने और प्रबंधित करने की अनुमति देता है। यह विभिन्न डेटा प्रारूपों का समर्थन करता है और आसान डेटा हेरफेर को सक्षम बनाता है, जैसे—डेटासेट को सॉर्ट करना, मर्ज करना और फिल्टर करना।

2. **वर्णनात्मक सांख्यिकी**—एसपीएसएस जल्दी से माध्य, माध्यिका, बहुलक, मानक विचलन और भिन्नता जैसे सारांश आंकड़े उत्पन्न कर सकता है। यह आवृत्ति वितरण, क्रॉस-टैब्यूलेशन और चार्ट भी प्रदान करता है, जो डेटा की बुनियादी विशेषताओं को समझने में मदद करता है।

3. **अनुमानात्मक सांख्यिकी**—एसपीएसएस टी-परीक्षण, एनोवा, प्रतिगमन विश्लेषण, कार्ई-स्क्वायर परीक्षण और बहुत कुछ जैसे सांख्यिकीय परीक्षणों की एक विस्तृत शृंखला प्रदान करता है। ये परीक्षण नमूना डेटा के आधार पर जनसंख्या के बारे में अनुमान लगाने, परिकल्पनाओं का परीक्षण करने और चर के बीच संबंधों की जांच करने में मदद करते हैं।

4. **ग्राफिकल प्रतिनिधित्व**—सॉफ्टवेयर हिस्टोग्राम, बार चार्ट, स्कैटरप्लॉट और बॉक्सप्लॉट सहित विभिन्न प्रकार के ग्राफ और चार्ट बनाने के लिए मजबूत उपकरण प्रदान करता है। ये विजुअलाइजेशन डेटा पैटर्न की खोज करने और परिणामों को समझने योग्य तरीके से प्रस्तुत करने में मदद करते हैं।

5. **उन्नत विश्लेषण**—एसपीएसएस जटिल सांख्यिकीय मॉडलिंग का समर्थन करता है, जिसमें कारक विश्लेषण, क्लस्टर विश्लेषण, विभेदक विश्लेषण और बहुभिन्नरूपी विश्लेषण शामिल हैं। ये उन्नत तकनीकें डेटा से गहरी अंतर्दृष्टि उजागर करने के लिए उपयोगी हैं।

6. **स्वचालित प्रक्रियाएं**—एसपीएसएस उपयोगकर्ताओं को सिटैक्स कमांड के माध्यम से दोहराए जाने वाले कार्यों को स्वचालित करने, समय बचाने और विश्लेषण में स्थिरता सुनिश्चित करने की अनुमति देता है।

7. **रिपोर्टिंग**—सॉफ्टवेयर विस्तृत आउटपुट फाइलें उत्पन्न करता है, जिसमें तालिकाएँ, ग्राफ और सांख्यिकीय परिणाम शामिल होते हैं, जिससे निष्कर्षों की व्याख्या करना और रिपोर्ट करना आसान हो जाता है।

8. **उपयोगकर्ता के अनुकूल इंटरफ़ेस**—एसपीएसएस अपने सहज ग्राफिकल यूजर इंटरफ़ेस के लिए जाना जाता है, जो इसे सांख्यिकीय विशेषज्ञता के विभिन्न स्तरों वाले उपयोगकर्ताओं के लिए सुलभ बनाता है। पॉइंट-एंड-क्लिक मेनू उपयोगकर्ताओं को व्यापक प्रोग्रामिंग ज्ञान की आवश्यकता के बिना जटिल विश्लेषण करने की अनुमति देता है। ■ ■

Sample Preview of The Chapter

Published by:



**NEERAJ
PUBLICATIONS**

www.neerajbooks.com

शोध पद्धतियाँ और विधियाँ

(RESEARCH APPROACHES AND METHODS)

शोध पद्धतियाँ

(RESEARCH APPROACHES)

सामाजिक यथार्थ के बोधार्थ उपागम
(Cognitive Approaches of Social Reality)

सामाजिक शोध का तर्क
(Argument for Social Research)

1

परिचय

समाजशास्त्र पश्चिम में प्रारम्भ हुआ, पर उसका मूल यूरोप या प्रारम्भिक दार्शनिक विचारों में व्याप्त था। अरस्तू प्रथम तार्किक था। वस्तुतः समाज का विज्ञान उसी समय सम्भव हो सका जब यह स्वीकार कर लिया गया कि समाज का निर्माण ईश्वर ने नहीं वरन् मनुष्य ने किया है। वैज्ञानिक विधा के रूप में समाजशास्त्र विज्ञान का मार्गदर्शी सिद्धान्त यह है कि वैध ज्ञान की प्राप्ति केवल प्रमाण के विश्वसनीय तथा कड़े नियमों से ही हो सकती है। हमारे मस्तिष्क में वैज्ञानिक ज्ञान की एक विशेष धारणा होती है कि विज्ञान विश्व को उसके वास्तविक रूप में नियंत्रित करता है। कॉम्टे ने तर्क प्रस्तुत किया कि जिस प्रकार वैज्ञानिकों ने प्राकृतिक जगत का अध्ययन करके भौतिक जगत में पदार्थ के व्यवहार को निर्धारित करने वाले प्राकृतिक नियमों को खोजा है, उसी प्रकार समाजशास्त्र में भी सम्भव है। उसने प्रत्यक्षवाद के प्रत्यय को प्रस्तुत किया। उसने समाजशास्त्र के कार्यों का निरूपण किया। इस सम्बन्ध में आगमनात्मक तथा निगमनात्मक दोनों विधियों का प्रयोग किया गया। देकार्त ने समाजशास्त्र के विकास में कार्टेजियन द्वैत के प्रत्यय द्वारा योगदान किया। कालान्तर में अवलोकन या प्रेक्षण समाजवैज्ञानिकों के लिये प्रभावी शोध-पद्धति बन गयी। विन्डलबैन्ड ने सामान्यीकृत नियमों तथा निजी नियमों की विवेचना की। टर्नर ने

यह स्पष्ट कर दिया कि समाज के अध्ययन में पूर्वाग्रहों, अवधारणाओं, प्रतिज्ञापितियों तथा नियमों के साथ औपचारिक सिद्धान्त प्रयुक्त होता है। अतएव समाज विज्ञान प्राकृतिक विज्ञान के समान है।

स्वपरख-प्रश्न

प्रश्न 1. क्या समाजशास्त्र समाज का विज्ञान है? स्पष्ट कीजिये।

Is Sociology the Science of Society? Explain.

उत्तर— समाजशास्त्र समाज के विज्ञान के रूप में

(Sociology as the Science of Society)

प्रस्तावना—समाजशास्त्र को समाज का विज्ञान मानने में लम्बा सफर तय करना पड़ा है। समाजशास्त्र को समाज का विज्ञान माना जाना उसी स्थिति में सम्भव हो सका जब यह समझा व स्वीकार कर लिया गया कि समाज का निर्माण ईश्वर ने नहीं, मनुष्य ने किया है।

(1) प्रमाण पर आधारित ज्ञान (Knowledge based on proofs)—वैज्ञानिक विधा के रूप में समाजशास्त्र विज्ञान का मार्गदर्शी सिद्धान्त यह है कि वैध ज्ञान की प्राप्ति केवल प्रमाण के विश्वसनीय और कड़े नियमों से ही हो सकती है। इस अर्थ में अन्य सामाजिक विज्ञानों की भाँति समाजशास्त्र भी विज्ञान है। प्राकृतिक विज्ञानों द्वारा मान्य वैज्ञानिक क्रियापद्धति और समाजशास्त्र के मध्य

2 / NEERAJ : शोध पद्धतियाँ और विधियाँ

सम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि समाजशास्त्र भी प्राकृतिक विज्ञानों कि भाँति एक वैज्ञानिक विषय है। यह भी ज्ञात किया जा सकता है कि यदि समाजशास्त्र प्राकृतिक विज्ञानों की शोध-पद्धति और विधियों का अनुसरण करे, तो क्या यह वैज्ञानिक हो सकता है? इसके लिए उन विभिन्न क्रियाविधियों को जानना आवश्यक है, जिनका अनुसरण समाजशास्त्रियों द्वारा अध्ययन हेतु किया जाता है।

(2) वास्तविकता का प्रस्तुतीकरण (Presentation of Reality)—हमारे मस्तिष्क में वैज्ञानिक ज्ञान की एक विशेष धारणा होती है। धारणा यह है कि विज्ञान विश्व को उसके वास्तविक रूप में नियन्त्रित करता है, न कि व्यक्तिगत इच्छा या आदर्श के रूप में। इस प्रकार, वैज्ञानिक ज्ञान हमें सामाजिक और प्राकृतिक विश्व के स्वरूप का वास्तविक ज्ञान प्राप्त करने की सम्भावना प्रदान करता है। यह ज्ञान जनसाधारण की राय या अप्रमाणित विश्वास और अन्धविश्वास पर आधारित नहीं होता। समाजशास्त्र के सम्बन्ध में इस प्रकार की धारणा के विकास का श्रेय ऑगस्ट कॉम्टे को प्राप्त है। ऑगस्ट कॉम्टे को ही समाजशास्त्र का संस्थापक माना जाता है। समाजशास्त्र शब्द भी ऑगस्ट कॉम्टे के लेखन से लिया गया है।

प्रश्न 2. समाजशास्त्र के स्वरूप व कार्यों पर कॉम्टे के विचार स्पष्ट कीजिए।

Explain the views of August Comte on the nature and functions of Sociology.

उत्तर—समाजशास्त्र के स्वरूप व कार्यों पर कॉम्टे के विचार (Views of Comte on the Nature and Functions of Sociology)

कॉम्टे का तर्क (Reasoning or argument given by Comte)—कॉम्टे ने समाजशास्त्र के विज्ञान होने के समर्थन में तर्क प्रस्तुत किया कि जिस प्रकार वैज्ञानिकों ने प्राकृतिक जगत का अध्ययन करके भौतिक जगत में पदार्थ के व्यवहार को निर्धारित करने वाले प्राकृतिक नियमों को खोज लिया है। उसी प्रकार ऐसे नियमों की खोज की जा सकती है जो सामाजिक जगत में लोगों के व्यवहार को निर्धारित करते हैं। अपनी पुस्तक 'कोर्स ऑफ पॉजिटिव फिलॉसफी' (Course of Positive Philosophy-1839-1842) में कॉम्टे ने यह विचार प्रस्तुत किया कि मानवीय सामाजिक विकास सकारात्मक दर्शन के विकास के माध्यम से सामाजिक जगत में लोगों के व्यवहार करने वाले नियमों को वास्तविक रूप में ज्ञात किया जा सकता है। इस प्रकार, प्राकृतिक विज्ञानों की शोध-पद्धति को सामाजिक वैज्ञानिकों द्वारा समाजशास्त्र के विकास के लिए मॉडल के रूप में प्रयुक्त करना सम्भव है। कॉम्टे का सिद्धान्त प्रत्यक्षवाद (Positivism) कहलाता है।

कॉम्टे का प्रत्यक्षवाद का प्रत्यय (Comte's Concept of Positivism)—कॉम्टे के प्रत्यक्षवाद की प्रमुख मान्यताएँ निम्न प्रकार हैं—

(1) स्थायी सम्बन्धों के अध्ययन पर बल (Emphasis on the study of the Permanent Relations)—प्रत्यक्ष अवस्था में परम सत्य की धारणाओं, ब्रह्मांड के स्रोत व गंतव्य और

प्रत्यक्ष वस्तुओं के कारणों की खोज न करके, उसके स्थान पर उसके अनुक्रमण और समरूपता के स्थायी सम्बन्धों का अध्ययन किया जाये।

(2) तर्क व अवलोकन (Logic and Observation)—एक साथ भली प्रकार जोड़े गये तर्क और अवलोकन इस ज्ञान की प्राप्ति के साधन हैं।

(3) तथ्यों की व्याख्या (Analysis of Facts)—तथ्यों की व्याख्या का अर्थ है कि गोचर विषय या प्रत्यक्ष वस्तु तथा कुछ सामान्य तथ्यों के मध्य सम्बन्ध है।

(4) विज्ञान की प्रगति व सामान्य संख्या (Progress of Science and Common Facts)—विज्ञान की प्रगति के साथ-साथ सामान्य तथ्यों की संख्या में कमी होती जाती है।

(5) विज्ञान का लक्ष्य (Objective of Science)—विज्ञान का लक्ष्य यह ज्ञात करना नहीं है कि चीजें अस्तित्व में क्यों आईं या उनके अस्तित्व का क्या कारण था? विज्ञान का लक्ष्य यह व्याख्या करना है कि स्थायी और सर्वव्यापी नियमों के अधीन कैसे सम्बन्ध है।

(6) विज्ञान के उपादान (Objects of Science)—अवलोकनीय गोचर विषय वस्तुएँ ही प्रत्यक्ष विज्ञान के प्रमुख उपादान हैं।

(7) प्रत्यक्ष विज्ञान का लक्ष्य (Aim of Positivism)—प्रत्यक्ष विज्ञान का लक्ष्य तथ्यात्मक ज्ञान को एकत्र करने के माध्यम से गोचर विषयों या वस्तुओं के मध्य नियमानुगत सम्बन्धों की स्थापना करना है।

(8) तथ्यात्मक ज्ञान (Factual Knowledge)—तथ्यात्मक ज्ञान अवलोकन या प्रेक्षण, प्रयोग, तुलना, पूर्वानुमान के माध्यम से प्राप्त किया जाता है। व्यापक सीमा वाले नियमों को खोजने के पश्चात् इन नियमों के एक-दूसरे के साथ पारस्परिक सम्बन्ध की व्याख्या की जा सकती है।

(9) विज्ञान का तात्पर्य (Meaning of Science)—विज्ञान का तात्पर्य नियमों की क्रमिक खोज कर उनके पारस्परिक सम्बन्ध खोजना है, ताकि विज्ञान एक ऐसा सामान्य नियम प्रतिपादित कर सके, जिससे समस्त नियमों का उदय होता है।

(10) सामाजिक जगत निरपेक्ष (Social World Absolute)—सामाजिक जगत उतना ही नियमित और निरपेक्ष है, जितना प्राकृतिक जगत।

(11) सामाजिक कानून (Social Laws)—सामाजिक कानून सामाजिक जगत को उसी प्रकार नियंत्रित करते हैं, जिस प्रकार प्राकृतिक नियम प्राकृतिक जगत को नियन्त्रित करते हैं।

(12) नवीन प्रत्यक्षवादी दृष्टिकोण (New Positivist Approach)—प्राकृतिक विज्ञान की शोध-पद्धति के आधार पर एक नवीन प्रत्यक्षवादी दृष्टिकोण विकसित किया जाये।

समाजशास्त्र के कार्य (Functions of Sociology)—कॉम्टे के अनुसार समाजशास्त्र का प्रमुख कार्य सामाजिक विकास के सामान्य नियमों की खोज करना है। सामान्य नियमों को निम्नलिखित श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है—

(1) सहअस्तित्व या सामाजिक स्थैतिकी के नियम (Rules of Coexistence)—ये नियम समाज के विभिन्न अंगों के मध्य सम्बन्ध को संचालित करते हैं। इन नियमों से समाज के विभिन्न अंगों के मध्य सम्बन्ध एवं प्रकार्य निर्धारित होते हैं।

(2) अनुक्रम या सामाजिक गतिकी के नियम (Rules of Social Dynamism)—ये नियम सामाजिक परिवर्तन का संचालन करते हैं। सामाजिक संस्थाओं के स्वरूप और प्रकार्य में कालांतर में परिवर्तन ज्ञात करना आवश्यक है।

कॉम्टे के पूर्वाग्रह (Assumptions of Comte)—कॉम्टे के दो प्रमुख पूर्वाग्रह निम्न प्रकार हैं—

(1) समाज के विकास का स्वरूप (Nature of the Development of Society)—समस्त समाज विकास की प्रक्रिया से होकर गुजरते हैं। उनके विकास की अवस्थाएँ सरल से जटिल की ओर होती हैं। समाज क्रमशः अधिकाधिक जटिल तथा संस्थागत रूप से भिन्न हो जाते हैं तथा विशिष्ट प्रकार का कार्य करते हैं।

(2) पारस्परिक निर्भरता (Interdependence)—कॉम्टे का निष्कर्ष है कि विकास प्राकृतिक और प्रमाणित करने योग्य तथ्य है। इसका संचालन विकास के नियमों द्वारा होता है।

विकास के नियमों की खोज (Discovery of the Laws of Evolution)—कॉम्टे के अनुसार समाजशास्त्र के प्रमुख कार्य निम्न प्रकार हैं—

- (1) व्यवस्थित प्रेक्षण करना।
- (2) विषय-सामग्री या तथ्यों को एकत्रित करना।
- (3) तथ्यों की व्याख्या करने के लिए सिद्धान्तों को विकसित करके विकास के नियमों को खोजना।

कॉम्टे के विचारों का तर्क आगमनवाद (Inductivism) कहलाता है।

प्रश्न 3. कॉम्टे द्वारा प्रस्तुत विज्ञानों के संस्तरण सिद्धान्त की विवेचना कीजिए।

Discuss the Theory of Hierarchy of Science as presented by Comte.

उत्तर—विज्ञानों के संस्तरण का सिद्धान्त (Theory of Hierarchy of Sciences)—कॉम्टे को विज्ञानों के वर्गीकरण का विचार सेन्ट साइमन से मिला था। यद्यपि वे सेन्ट साइमन के इस विचार से तो सहमत थे कि विज्ञानों का वर्गीकरण वैज्ञानिक ढंग से किया जाना चाहिए, तथापि वे सेन्ट साइमन के वर्गीकरण से सहमत नहीं थे। उन्होंने सेन्ट साइमन से अधिक वैज्ञानिक आधारों पर विज्ञानों का वर्गीकरण प्रस्तुत करने का दावा किया। कॉम्टे का 'ज्ञान का विज्ञानों का वर्गीकरण का सिद्धान्त' निम्नलिखित है—

वस्तुतः कॉम्टे का उद्देश्य समाजशास्त्र के नवीन विज्ञान को एक सुदृढ़ आधार प्रदान करना था, जिससे वह एक विशिष्ट विज्ञान के रूप में विकसित हो सके। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए समस्त विज्ञानों के विकास-क्रम का एक निश्चित सिद्धान्त प्रतिपादित करने का प्रयत्न किया गया। इस विकास-क्रम के आधार पर कॉम्टे ने विज्ञानों का संस्तरण (Hierarchy of Sciences) प्रस्तुत किया, जिसके द्वारा प्रत्येक विज्ञान के विकास की स्थिति स्पष्ट की। विज्ञानों का वर्गीकरण करते समय समाजशास्त्र को नवीनतम और

जटिलतम विज्ञान सिद्ध किया गया है, जिसका विकास-क्षेत्र अन्य विज्ञानों की अपेक्षा अधिक व्यापक है। ज्ञान या विज्ञानों का इस प्रकार का वर्गीकरण करने के लिए उन्होंने पराश्रयता वृद्धि-क्रम (The Order of Increasing Dependence) के सिद्धान्त को चुना। कॉम्टे के विचारानुसार ज्ञान या विज्ञान की प्रत्येक शाखा अपने से पहली शाखा या विज्ञान के द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों पर आश्रित होती है। इस निर्भरता के परिणामस्वरूप जैसे-जैसे हम ज्ञान या विज्ञान की एक शाखा से दूसरी शाखा को आगे बढ़ाते जाते हैं, उसके साथ ही उस शाखा की पराश्रयता (Dependence) में वृद्धि होती जाती है। जो सर्वप्रथम विज्ञान है, वह किसी पर निर्भर नहीं है; इसके बाद दूसरा विज्ञान विकसित प्रथम विज्ञान पर आश्रित या निर्भर होगा; तीसरा विज्ञान पहले और दूसरे विज्ञान पर आश्रित होगा; चौथा विज्ञान पहले, दूसरे और तीसरे विज्ञान पर निर्भर होगा और इसी क्रम से विज्ञान की प्रत्येक शाखा की पराश्रयता में वृद्धि होती जायेगी। यही कारण है कि कॉम्टे के विज्ञानों के वर्गीकरण का सिद्धान्त 'पराश्रयता वृद्धि-क्रम का सिद्धान्त' कहलाता है।

आधार (Basis)—कॉम्टे का वर्गीकरण दो प्रमुख सिद्धान्तों पर आधारित है—

(1) बढ़ती हुई निर्भरता का क्रम (Order of Increasing Dependence)

(2) घटती हुई सामान्यता और बढ़ती हुई जटिलता (Decreasing Generality and Increasing Complexity)

इनका विवरण निम्न प्रकार है—

(1) बढ़ती हुई निर्भरता का क्रम (Order of Increasing Dependence)—कॉम्टे ने अपने नवीन विज्ञान समाजशास्त्र का अध्ययन क्षेत्र स्पष्ट करने के लिए समस्त विज्ञानों के वर्गीकरण का एक नवीन आधार चुना। यह आधार उतार-चढ़ाव (Ups and Downs) का आधार कहा जा सकता है। कॉम्टे के इस सिद्धान्त के अनुसार ज्ञान की प्रत्येक शाखा एक ओर अपने से पूर्व विकसित विज्ञानों के द्वारा प्रतिपादित नियमों पर आश्रित होती है और दूसरी ओर, अपने पश्चात् उदित होने वाले विज्ञानों का मार्गदर्शन करती है।

दूसरे शब्दों में, जो विज्ञान जितना नवीन होगा, वह दूसरे पूर्ववर्ती विज्ञानों पर उतना ही अधिक आश्रित होगा। इस प्रकार मानवीय ज्ञान की प्रथम शाखा (First Science) स्वतन्त्र होगी अर्थात् किसी पर निर्भर नहीं होगी। दूसरा विज्ञान इस प्रथम विज्ञान पर निर्भर होगा, तीसरा विज्ञान प्रथम तथा दूसरे विज्ञान पर निर्भर होगा। चौथा विज्ञान पहले, दूसरे और तीसरे विज्ञानों पर निर्भर होगा। इस प्रकार हर अवस्था में नया विज्ञान अधिक आश्रित (Dependent) होता चला जाएगा। नवीनतम विज्ञान सबसे अधिक आश्रित होता है और प्राचीनतम विज्ञान आत्मनिर्भर और स्वतन्त्र। जो विज्ञान जितना अधिक पराश्रित है, वह उतना ही नवीन है। इस सिद्धान्त के आधार पर कॉम्टे ने विज्ञानों के संस्तरण में प्रत्येक विज्ञान की स्थिति निर्धारित की है।

(2) घटती हुई सामान्यता और बढ़ती हुई जटिलता (Decreasing Generality and Increasing Complexity)—कॉम्टे के द्वारा प्रस्तुत विज्ञानों के वर्गीकरण का दूसरा प्रमुख आधार

4 / NEERAJ : शोध पद्धतियाँ और विधियाँ

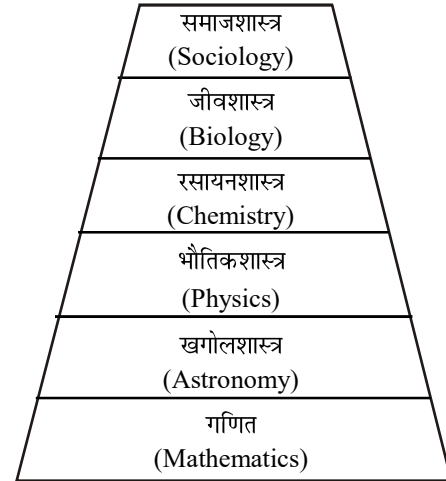
‘घटती हुई सामान्यता और बढ़ती हुई जटिलता’ का नियम है। विज्ञानों के संस्तरण में किसी भी विज्ञान की स्थिति का विनिश्चयन उसके द्वारा अध्ययन की जाने वाली विषय-वस्तु की प्रकृति द्वारा किया जाता है। जिस विज्ञान की विषय-वस्तु जितनी अधिक सरल होगी, वह उतना ही कम पराश्रित होगा। विज्ञान की विषय-वस्तु जटिल होने के साथ-साथ वह दूसरे विज्ञानों पर अधिक आश्रित होता जाएगा। उदाहरणार्थ, वे घटनाएँ जो सरल होती हैं, उनका अध्ययन करना भी सरल होता है। वे सामान्य होती हैं अर्थात् हर स्थान पर विद्यमान होती हैं। कॉम्टे का कथन है कि “सर्वाधिक सरल घटनाएँ सर्वाधिक सामान्य होती हैं, सामान्य इन अर्थों में कि वे सब जगह विद्यमान होती हैं।”

सर्वप्रथम, सरल घटनाएँ घटित होती हैं। तत्पश्चात् जटिल घटनाएँ आती हैं। घटनाओं में कार्य-कारण सम्बन्ध होने के कारण सर्वप्रथम घटनाएँ सर्वाधिक सरल और सामान्य होती हैं। उनके प्रभाव से दूसरी घटनाएँ उत्पन्न होती हैं, जो उनकी अपेक्षा जटिल होती हैं और इसी प्रकार घटनाएँ, क्रमशः सर्वप्रथम घटना सामान्य होती है। इसका अध्ययन करने वाला विज्ञान भी सर्वप्रथम और सर्वाधिक सामान्य होगा। इस प्रकार विज्ञानों के विकास के क्रम में प्रत्येक विज्ञान अपने से पूर्व विकसित विज्ञानों से अधिक जटिल और आगे विकसित होने वाले विज्ञानों से अधिक सरल और सामान्य होता है। इस प्रकार सबसे प्रथम विज्ञान सबसे अधिक सामान्य और सबसे कम जटिल घटनाओं या विषयों से सम्बन्धित होता है। इस प्रथम विज्ञान के बाद जिन अन्य विज्ञानों का विकास हुआ, उनका अध्ययन-विषय क्रमशः कम सामान्य और अधिक जटिल होता गया। इस प्रकार दूसरा विज्ञान प्रथम विज्ञान से अधिक जटिल विषय-वस्तु से सम्बन्धित होता है। तीसरा विज्ञान दूसरे विज्ञान की अपेक्षा कम सामान्य और अधिक जटिल विषय से सम्बन्धित होता है। यही क्रम निरंतर चलता रहता है। विज्ञानों के विकास के इस क्रम में प्रत्येक विज्ञान अपने से पहले के विज्ञान या विज्ञानों की खोजों, निष्कर्षों और सिद्धान्तों पर क्रमशः अधिक निर्भर होता जाता है। अर्थात् उसकी पराश्रयता में क्रमशः वृद्धि होती जाती है। इस प्रकार प्रत्येक आगामी विज्ञान पूर्व विज्ञान या विज्ञानों पर आधारित रहते हुए अगले विज्ञान के लिए आधार प्रस्तुत करता है। कॉम्टे के मतानुसार प्रत्येक विज्ञान अपने पिछले विज्ञान या विज्ञानों पर केवल निर्भर ही नहीं रहता है, बल्कि वह पिछले विज्ञान या विज्ञानों को अपनी खोजों से सींचता भी रहता है।

विज्ञानों का संस्तरण (Hierarchy of Sciences)—कॉम्टे के द्वारा प्रतिपादित विज्ञानों का संस्तरण निम्नलिखित रूप से स्पष्ट किया जा सकता है—

- (1) गणितशास्त्र (Mathematics)
- (2) खगोलशास्त्र (Astronomy)
- (3) भौतिकशास्त्र (Physics)
- (4) रसायनशास्त्र (Chemistry)
- (5) जीवशास्त्र (Biology)
- (6) समाजशास्त्र (Sociology)

विज्ञानों का संस्तरण निम्नलिखित चित्र द्वारा अधिक स्पष्टता से समझा जा सकता है—



समाजशास्त्र—गणित, खगोल, भौतिकशास्त्र, रसायनशास्त्र तथा जीवशास्त्र पर आश्रित।

जीवशास्त्र—गणित, खगोल, भौतिकशास्त्र तथा रसायनशास्त्र पर आश्रित।

रसायनशास्त्र—गणित, खगोल, भौतिकशास्त्र पर आश्रित।

भौतिकशास्त्र—गणित तथा खगोल पर आश्रित।

खगोलशास्त्र—गणित पर आश्रित।

गणित—प्राचीनतम स्वाधीन।

इस संस्तरण में समाजशास्त्र को नवीनतम तथा सब विज्ञानों पर आश्रित सर्वोच्च विज्ञान बताया गया है। यह संस्तरण विज्ञानों की परिशुद्धता तथा पूर्णता पर आधारित है। कॉम्टे के शब्दों में, “यह वर्गीकरण यथार्थता के साथ विभिन्न विज्ञानों की अपेक्षित पूर्णता पर प्रकाश डालता है, जो ज्ञान की परिशुद्धता की मात्रा में तथा उसकी विभिन्न शाखाओं के सम्बन्ध में पाई जाती हैं।”

कॉम्टे ने विज्ञानों का अध्ययन भी कम से कम करने की सलाह दी है। समाजशास्त्र का यथार्थ अध्ययन प्रारम्भ करने से पूर्व गणित, खगोल, भौतिक तथा रसायनशास्त्र और जीवशास्त्र के सामान्य नियमों का ज्ञान प्राप्त कर लेना आवश्यक है। कॉम्टे के वर्गीकरण से यह स्पष्ट है कि समाजशास्त्र जटिलतम, विशिष्टतम और नवीनतम विज्ञान है। अतः इसका अध्ययन अधिक से अधिक होना चाहिए।

प्रश्न 4. ऑगस्ट कॉम्टे के चिंतन या वृद्धि के ‘त्रि-स्तरीय अथवा तीन अवस्थाओं के सिद्धान्त’ की विवेचना कीजिए।

Discuss Comte’s ‘Law of Three Stages’ of Thinking or Progress.

उत्तर—त्रि-स्तरीय सिद्धान्त (Laws of Three Stages)—सामाजिक चिन्तन के क्षेत्र में कॉम्टे की विचारधारा का प्रारम्भ उसके द्वारा प्रतिपादित ‘तीन अवस्थाओं के नियम’ (Law of Three Stages) से होता है। इस अवधारणा को उसने सन् 1822 ई. में स्पष्ट कर दिया था। कॉम्टे (Comte) के शब्दों में,